International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गॉधी चिन्तन में धर्म की समग्र अवधारणाः-

डॉ0 दुलारी राम मीना
सह-आचार्य (राजनीति विज्ञान)
राजकीय महाविद्यालय खण्डार,स0मा0 (राज0)

गॉधी जी का धर्म से अभिप्राय किसी प्रकार के धार्मिक आडम्बर से नही था, अपितु वे नैतिकता को धर्म का ही रूप मानते थे तथा धर्म और नैतिकता में किसी प्रकार का अन्तर नहीं करते थे। उनका विचार था कि मनुष्य विभिन्न गतिविधियों में किसी प्रकार का अन्तर नही करते थे। उनका विचार था कि मनुष्य विभिन्न गतिविधियों में किसी प्रकार का विभाजन रेखा खींचना आसान नही है। उन्होनें सभी धर्मो को समान समझा जो एक ईश्वर में आस्था रखने की प्रेरणा देते है। उनका विचार था कि एक राजनीतिक व्यक्ति में नैतिकता का होना अनिवार्य है। [1]

गांधी जी धर्म एवं ईश्वर में आस्था को सबसे अधिक महत्व देते थे। उनका मत था कि मुझे अपने अस्तित्व से भी ज्यादा विश्वास ईश्वर में है। उनका मत था ''मैं बिना हवा, पानी के जीवित रह सकता हूॅ लेकिन ईश्वर के बिना जीवित नही रह सकता।'' उनका कहना था कि यदि मेरी आंखे निकाल ली जाए, मेरा नाक काट दिया जाए तो भी मैं नही मरूंगा, लेकिन यदि ईश्वर पर से मेरा विश्वास छीन लिया जाए तो मैं उसी क्षण मर जाऊंगा। गांधी जी का धार्मिक आडम्बरों में विश्वास नहीं था। उनका विचार था कि मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर में जाने से कोई व्यक्ति धार्मिक नही हो सकता है। जब तक कि निष्काम भावना से कोई अपने दायित्वों का पालन न करें। वे गीता के इस वाक्य में विश्वास करते थें कि व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए तथा परिणाम की ओर ध्यान नही देना चाहिए।[2]

उनका यह भी विचार था [3] कि धर्म का उद्देश्य भी एक ही है। सभी धर्म एक ही लक्ष्य की पूर्ति करते है। इस लक्ष्य तक पहुंचने के उनके साधन भिन्न हो सकते है। रास्ते भिन्न होने से किसी प्रकार का कोई अन्तर नही पड़ता है क्योंकि अन्त में हम सभी एक ही लक्ष्य को प्राप्त कर लेते है। गांधी जी का विचार था कि जब कोई धर्म अपने चिह्न अपना लेते है और उनका प्रयोग अन्य धर्मो पर अपनी सर्वोच्चता स्थापित करने के लिए करता है तो इस प्रकार के धर्म का त्याग करना ही उचित है। गांधी जी को हम केवल हिन्दू धर्म का अनुयायी नहीं मान सकते, उन पर अनेक अन्य धर्मो का भी प्रभाव थां इसमें जैन, बौद्ध, इस्लाम, ईसाई, आदि धर्मो को शामिल किया जा सकता है। उनका विचार था कि प्रत्येक धर्म के ग्रन्थ में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

एक ईश्वर विधमान है। कुरान, बाईबल आदि में जो शुदा तथा 'गॉड' है वो ईश्वर एक ही है। ईश्वर के नाम हजारों में ही नहीं बल्कि लाखो में हो सकते है। उनका विचार था कि हम उसे किसी भी नाम से पुकारें वह एक ही है। इसी प्रकार से सभी धर्म एक है। सभी धर्मो का सारांश एक है। सभी धर्मो का आधार नैतिकता, सत्यनिष्ठा, अहिंसा तथा प्रेम है। उनका विचार था– ''मैं एक सच्चा सनातनी हिन्दू हूॅ मेरा हिन्दू धर्म मुझे आदेश देता है कि मैं हिन्दू धर्म की आराधना के साथ–साथ इस्लाम प्रार्थना भी करूॅ तथा पारसी एवं ईसाई प्रार्थना भी करूॅ। ये सभी प्रार्थनाएं करने में मेरा हिन्दूत्व नष्ट नही होता, क्योंकि सच्चा हिन्दू वही है जो सच्चा मुसलमान तथा पारसी है।''

गांधी जी का मत था ''बहुत से धार्मिक व्यक्ति जिनसे मैं मिला हूॅ वास्तव में राजनीतिक है। लेंकिन मैं, जिसने कि राजनीति का चोला पहन रखा है वास्तव में धार्मिक व्यक्ति हूॅ।'' गांधी जी धर्म में सत्य का समावेश भी करते है तथा इसी सत्य को धर्म के नाम पर राजनीति में स्थापित भी करना चाहते है। उनका विचार था– ''सत्य के अन्दर मेरी निष्ठा ने मुझे राजनीतिक क्षेत्र में आकर्षित किया है तथा मैं बिना किसी भी सहायता के साथ कह सकता हूॅ कि जो लोग कहते है कि धर्म का राजनीतिक से कोई संबंध नही है, वे धर्म के अर्थ को ही नही जानते।''[4]

धर्म और नैतिकता का अटूट संबंध है। नैतिकता और धर्म न केवल अन्योन्याश्रित है, प्रत्युत एक दूसरे के पूरक भी। वह धर्म, धर्म नही, जो नैतिकता में बद्धमूल न हो और वह नैतिकता, नैतिकता नही, जिसकी चरम परिणति धर्म में न हो। नैतिकता की आधारशिल पर ही धर्म का प्रासाद निर्मित होता है। नैतिकता धर्म के लिए मार्ग प्रशस्त करती है, और धर्म नैतिकता को पूर्णता प्रदान करता है। नैतिकता और धर्म में आंगिक संबंध है। नैतिकता शरीर है तो धर्म समाधान।

गांधी जी सत्य और धार्मिक ज्ञान मं सर्वोपरि मानते थे। उन्होनें सत्य के सैद्धान्तिक और व्यवहारिक दोनो पक्षों पर समान बल दिया। गांधी दर्शन में सत्य का स्थान महत्वपूर्ण है। सत्य के अभाव में गांधीवाद निष्प्राण है। सत्य शब्द गांधी जी के मतानुसार 'सत' से निकला है जिसका अर्थ है होना या अस्तित्व। गांधी जी के अनुसार सत्य ही ईश्वर है और ईश्वर ही सत्य है। दोनो का एक–दूसरे से घनिष्ठ संबंध है क्योंकि सत्य का अर्थ है अस्तित्व और एकमात्र ईश्वर का अस्तित्व सदैव तीनो कालों–भूत, वर्तमान एवं भविष्य में बना रहता है।

गांधी जी सत्य की खोज करना अपने जीवन का लक्ष्य समझते थे। इसी कारण उन्होने अपनी आत्मकथा का नाम सत्य के साथ मेरे प्रयोग रखा है।[5]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गांधी जी के विचारो को प्रस्तुत करते हुए एस.के. मुखर्जी का कथन है [7] ''आधुनिक सभ्यता के संदर्भ में गांधी जी का यह अन्तिम निर्णय है कि यह चार दिनो की चांदनी है क्योंकि इसका अपने अस्तित्व के नियम द्वारा अवश्य ही पतन हो जाना है। पदार्थ अपनी सत्ता के केवल मात्र स्वयं अधिक समय तक बनाए नही रख सकता। वह अपनी सत्ता को केवल आत्मा की शक्ति से वापस रख सकता है, तथा कोई भी सभ्यता जो अपनी भौतिक उपलब्धियों एंव वैभव के कारण गर्व करती है जो वह समय आने पर परीक्षा में सफल नही हो सकती।''

प्रो. शांति प्रसाद वर्मा [8] केशब्दों में, ''मैं समझता हूं कि किसी भी अच्छे लोक राज्य के लिए यह आवश्यक है कि वह कानून के द्वारा इस प्रकार की सामाजिक असमानता को मिटाने का प्रयत्न करें और उन लोगो को सख्त सजाएं दे जो, चाहे वह तीन वेदों के, ज्ञाता हों या चार वेदों के पंडित, इस प्रकार की असमानता को कायम रख चाहते है। भारतीय जनतंत्र के लिए यह आवश्यकता है कि वह उन सब कुरीतियों को मिटावें जो धर्म के नाम पर भारतीय-हिन्दू व मुस्लिम-समाज में प्रचलित है।'' राष्ट्रीयता के निर्माण में धर्म अब तक सदा ही गौण वस्तु रहा है। अतः भारतीय राष्ट्रीयता के अन्तर्गत तो सभी लोगो को लेना बुद्धिमता होगी जो इस देश में रहते हो ओर इसे अपना देश मानते हो। राष्ट्रीयता को धर्म के साथ सम्बद्ध कर देना सदा ही खतरनाक होता है।

जार्ज सिमेल [6]के अनुसार धर्म सामाजिक एकता की अवधारणा की उच्चतम अभिव्यक्ति है। दुरखीम और बेबर द्वारा भी धर्म को मानव-समाज को संगठित और एकीकृत करने वाला तत्व माना गया है। जब गांधी जी धर्म का सामाजिक क्षेत्र में उपयोग करते है, तो वह भी इसी संदर्भ से प्रेरित है। जब वह राजनीति का आध्यात्मीकरण करने को कहते है, तो वह राजनीति का आध्यात्मीकरण करने को कहते' है, तो वह राजनीति से विग्रह, विघटन, विद्रोह ओर विनाश की प्रवृत्तियों का उन्मूलन करना चाहते है तथा सदभावना, समन्वय एवं संगठन के तत्वों का ज्यादा से ज्यादा समावेश चाहते है। संक्षेप में यदि कहा जाए कि गांधी जी की राजनीति धर्म की पूरक है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

गांधी जी एक नैतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक व्यक्ति थे। गांधी जी के जीवन पर अनेक धार्मिक ग्रन्थो का प्रभाव पडा। वे भारतीय ग्रन्थो में गीता को उतना ही सम्मान देते थे जितना ही बाईबल को। वे बाईबल की इस युक्ति से अत्यधिक प्रभावित थे कि ''पाप से घृणा करो पापी से नही।'' उन्होने बौद्ध धर्म और इस्लाम को भी वही स्थान दिया जो उन्होने हिन्दू धर्म को दिया। राजनीति में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उनके द्वारा धर्म को महत्व प्रदान करने का अभिप्राय किसी विशेष धर्म को स्थापित करना नही था। अपितु वे मानव धम्म को सबसे विशाल धर्म मानते थे। उन्होनें धर्म को नैतिकता के साथ जोड़ दिया था। वे धार्मिक उन्माद और साम्प्रदायिकता के विरूद्ध थे। गांधी जी का मत था कि ''मेरे लिए नैतिकता, सदाचार और धर्म पयार्यवाची है। धर्म के बिना नैतिक जीवन बालू रेत पर बनाए गये मकान के समान है।'' [7]

धर्म से अभिप्रायः गांधी जी का उन नैतिक आदर्शो का पालन करने से था जो प्रत्येक धर्म के द्वारा स्थापित किए गए थे। गांधी ने उन राजनीतिज्ञो और धर्म गुरूओं की आलोचना की है जो अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए उनका उपयोग करते है। गांधी जी का मत था कि ''बहुत से धार्मिक व्यक्ति जिनसे मेरा सम्पर्क हुआ है, वास्तव में राजनीतिज्ञ है यधपि मैं एक राजनीतिज्ञ हूॅ, लेकिन दिल से धार्मिक हूॅ।'' [8]

गांधी जी राजनीति तथा धर्म को अलग-अलग क्षेत्रो में नही रखते थे। गांधी जी मनुष्य की सभी गतिविधियों का आधार धर्म को नही मानते थे। इस प्रकार से राजनीति को भी धर्म से अलग नही किया जा सकता। यदि राजनीति में धर्म की अभिव्यक्ति नही होती तो वह राजनीति स्वार्थपूर्ण होगी। गांधी जी का मत था- ''धर्म से अलग मेरे लिए राजनीति का कोई अर्थ नही है। धर्म विहिन राजनीति मौत का फन्दा है, क्योंकि यह आत्मा का विनाश कर देती है।'' [9]

डॉ. राधाकृष्णन के मतानुसार [10], उनकी सत्य रूपी परमात्मा में पूर्ण आस्था थी, वे यह मानते थे कि दुनिया में जो कुछ होता है ईश्वर की इच्छा से होता है। हर व्यक्ति मे परमात्मा का अंश आत्मा के रूप में विराजमान है। हर व्यक्ति मूल रूप से नेक है, और यदि वह सत्य, अहिंसा और नैतिकता के रास्ते पर चले, तो ने केवल नेक बन सकता है, बल्कि परमात्मा के जितना करीब आना चाहे आ सकता है और ऐसा करके परमात्मा में अपनी आस्था विलीन करके मौक्ष प्राप्त कर सकता है। लेकिन बहुत थोडे लोग थे, जिन्होने गांधी को उनकी इन नैतिक मान्यताओं के आधार पर महात्मा माना हो। अधिकतर लोग तो उनकी सन्त की सी दिखने वाली पोशाक, जिसे वह स्वराज-विहीन भारत के मातम को बाहरी प्रतीक मात्र मानते थे, उनकी धार्मिक शब्दावली, तथा उनके सादे साधारण जीवन के आधार पर उनको देखते ही महात्मा मान लेते थे। गांधी को लोग न केवल सन्त महात्मा तथा न केवल राजनीतिज्ञ मानते थें, बल्कि अक्सर उन्हें संतो में राजनीतिज्ञ तथा राजनीतिज्ञों में संत मानते थे।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गांधी जी ने धर्म को कर्मकाण्ड के दायरे में सीमित रखने वाले दृष्टिकोण से कभी समझौता नही किया। यह बात अलग है कि वह स्वयं भी कर्मकाण्ड में आस्था रखते थे, लेकिन उसका रूप अलग था। उनको रामधुन प्रिय थी। प्रार्थना सभा में रघुपति राघव राजाराम की धुन में वह लीन हो जाते थे। सनातन मान्यता के अनुसार उनका ईश्वर की सर्वव्यापकता में विश्वास था ओर उसे ही वह नियत मानते थे। जगत गुरू शंकराचाय ने जिस ब्रहम सत्यम जगत मिथ्याः का उद्घोष किया था, गांधी ने उसे सत्य ही ईश्वर है' के रूप में सामने रखा। धर्म को उन्होने कर्तव्य के रूप में भारतीय मान्यता के अनुरूप ग्रहण किया तथा जैन ओर बौद्ध मत के अहिंसा के सिद्धान्त का समावेश कर उन्होने सत्य और अहिंसा को अपना मंत्र बनाया। उनका मत था कि आस्था का अर्थ उस वस्तु या वास्तविकता के अस्तित्व पर विश्वास करना है जो दिखाई नही देता। ईश्वर मे आस्था का यही आधार है। गांधी जी आस्तिक थे। यधपि वह मूर्तिपूजक नही थें, तथापि मूर्ति पूजा से उनका वैमनस्य नही थां उन्होने अपने धार्मिक आचरण को सेवा का स्वरूप प्रदान किया। इसलिए गांधी को ईश्वर का दरिद्रनारायण नाम सबसे प्रिय था। [11]

गांधी जी ने अपना संपूर्ण जीवन हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए समर्पित कर दिया था तथा साम्प्रदायिक सौहार्द की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहूति भी दे दी। उनकी सोच के मर्म को न तो हिन्दू ही समझ पाए और न ही मुसलमानो ने इस दिशा में अपनी संदाशयता का कोई परिचय दिया। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर सिफ़ वोट बैंक की राजनीति की गयी, नतीजतन दोनो समुदायों मे चरमपंथियों का प्रभाव बढता गया। कई बार तो ऐसा लगता है कि साम्प्रदायिक परिपेक्ष्य में हम उसी मोड़ पर आ खडे हुए है जहां देश 1940 के दशक में था। समय-समय पर धर्म के नाम पर होने वाले दंगे और फसाद स्वतंत्र भारत के माथे पर उस बदनुमा दाग की तरह है, जिसकी कल्पना गांधी जी ने कभी नही की होगी।

लार्ड लोथियन ने कहा था- '' आदमी अगर इतना मान ले कि रोगमात्र पाप का ही फल है तो काफी है। गीता में भी तो कहा है न कि पंचोद्रियों के विषयों का मनुष्य को त्याग कर देना चाहिए, क्योंकि वे माया है। ईश्वर जीवन प्रेम और स्वाथ्य है। '' [12]

दूसरे धर्मो के बारे में उन्होने लिखा है [13] कि- मैं संसार के किसी भी धर्म को झूठा नही मानता। सभी धर्मो ने मनुष्य जाति को ऊपर उठाने का काम किया है ओर वे आज भी अपना काम कर रहे है। जब मैने बाइबिल मे यह पढा कि इस

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संसार को ईश्वर और उसकी नेकी का राज्य बना लो तो सब चीजे तुम्हे मिल जायेगी– तभी से यह वाक्य मेरे हदय पर अंकित हो गया। मैं चाहता हूॅ कि आप इस कथन को समझे ओर इसकी भावना के अनुसार आचरण करे।''

गांधी जी ने केवल सच्चे धर्म को ही धर्म माना है। उन्होने ऐसी हर बात का विरोध किया है जो आदमी के विकास को रोकती है। उनका मत था कि पुराने धर्म या विचारों में अच्छाई भी है ओर बुराई भी। हमें अच्छाई को ले लेना चाहिए ओर बुराई को छोड देना चाहिए। उन्होने एक जगह लिखा है कि–''पुराने विचारो की खोज करते–करते मुझे एक बहुत कीमती रतन मिला है। वह यह कि हिन्दू धर्म मे जो बाते हमेशा कायम रहने वाली है, वही ईसा, बुद्धस ओर मुहम्मद के उपदेशो मे भी है। इसलिए जब कभी हिन्दू धर्म में मुझे कोई पुरानी बात मिलती है जो ईसाई या मुसलमान भाईयों के खिलाफ पडती है,तो उस बात की सच्चाई के बारे मे मेरे दिल में संदेह होने लगता है। इस तरह की खोज और जांच से मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूॅ कि सत्य और अहिंसा जैसी पुरानी और कोई चीज दुनिया में नही है। अगर पुराने रिवाज सत्य ओर अहिंसा के अनुकूल नही पडते तो उन्हे छोड देना चाहिए।'' [14]

धर्म का उनके लिए अर्थ था नैतिक प्रतिज्ञाओं की श्रेष्ठता को मान्यता देना। धार्मिक जीवन का वास्तविक अर्थ है इन प्रतिज्ञाओं का समर्पित रूपेण अनुसरण करना। इस प्रकार धर्म की राजनीति मे प्रवेश करने का अर्थ हे, ''सत्य तथा न्याय की नैतिक प्रतिज्ञाओं की ओर उत्तगेत्तर बढता।'' एक धार्मिक जीवन का अर्थ है समर्पित भाव से इन प्रतिज्ञाओं का पालन करना। उन्होने एक बार कहा था, [15]''मैं किसी भी धर्म, सिद्वान्त को नही मानता जो युक्तिसंगत न हो अथवा जिसका नैतिकता से टकराव हो। वह स्वयं लिखते है, ''सत्य के प्रति मेरी आस्था ही मुझे राजनीति के क्षेत्र में खीच लाई है। मैं बिना किसी झिझक के तथा पूर्ण विनम्रता के साथ कह सकता हूॅ कि जो लोग धर्म का राजनीति से कोई संबंध नही मानते, धर्म का अर्थ ही नही जानते।

कृपलानी का भी यह विचार है कि गांधी जी के लिए धर्म तथा नैतिकता पर्यायय है यह दोनो शब्द अन्तर्विनिमेय है। उन्होने स्वंय स्वीकार किया था कि यधपि उन्होने राजनीतिक का चोला पहना हुआ था तथापि वह एक धार्मिक पुरूष ही थे। वास्तव में गांधी आवश्यकतावश राजनीति में आए थे। परिस्थितियों ने उन्हे तूफानी नदियों से राज्य के जहाज का चालक बनने को बाध्य कर दिया। इस

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रकार वह अपने उस धार्मिक सिद्वान्त जिसके अनुसार वह सभी के लिए प्रेम ओर किसी के लिए घृणा नही का प्रचार करते थें, क्रियात्मक अभिव्यक्ति दे सके। [16]

गांधी जी को संसार के सभी धर्मो से प्रेरणा मिली थी। तथापि हिन्दू धर्म का उनके मन पर गहरा प्रभाव पडा था। हिन्दू धर्म वास्तव में सत्य का धर्म है जो सत्य तथा धर्म और सत्य तथा ईश्वर में कोई अन्तर नही देखता। अतः गांधी जी का मत था, [22] '' सत्य परमेश्वर है तथा उसके अतिरिक्त कोई अन्य परमेश्वर नही है।'' गांधी जी ने हिन्दू ध्यार्म के आध्यात्मिक तथा नैतिक सार को स्वीकार किया जो वास्तव में संसार के सभी महान धर्मो का सार था। किन्तु वह हिन्दू शास्त्रों को अक्षरक्षः स्वीकार नही करते थे। वह शास्त्रो की किसी ऐसी व्याख्या को स्वीकार नही करते थे जो तर्क अथवा नैतिक भावना के प्रतिकूल हो। गीता और रामायण के प्रति उनके उत्कृष्ट प्रेम का प्रमाण उनके इन शब्दों से प्रकट होता है, ''मुझे तुलसीदास की रामायण तथा गीता के संगीत से जो आनन्द मिलता है उतना किसी दूसरी वस्तु से नही।

आचार्य कृपालानी के शब्दों में [23] ''गांधी जी के हिन्दू धम्म में इसके स्वरूप समारोहो तथा संस्थाओं को कोई प्रश्रय नही थां जो युक्ति विरूद्व अथवा एकता विरोधी हो, उसे वह अस्वीकार कर देते थे। यधपि अपने को पुरातनवादी हिन्दू मानने में उन्हे प्रसन्नता होती थी, तथापित वह अस्पृश्यता जैसी गर्हित तथा कूर प्रथा और जातिवाद को स्वीकार नही करते थे।'' इसके अतिरिक्त नैतिक मार्गदर्शन के लिए केवल हिन्दू धर्म की और ही नही देखते थे।

धर्म की परिभाषा करते हुए महात्मा गांधी जी ने कहा [17], '' इसका अर्थ है विश्व के व्यवस्थित नैतिक शासन तंत्र में आस्था .....यह धर्म हिन्दू इस्लाम आदि धर्मो से भी परे है। यह उनका तिरस्कारस नही करता। यह उन्हे संबंधित करता है ओर वास्तविकता प्रदान करता है।'' उनके मत से ईश्वर का संदेश सभी धर्म–ग्रन्थो से विधमान है। उन्होने कहा था '' जो लोग भ्रांति से बचना चाहते है वे कुरान पढे ओर उन्हे पता चल जाएगा कि उसमें सैकडो आयते ऐसी है जो हिन्दुओं को स्वीकार्य होगी, भगवदगीता में भी ऐसे श्लोक है जिन पर किसी मुसलमान को ऐतराज नही हो सकता।'' एक अन्य स्थल पर उन्होने कहा, ''आपको मेरे जीवन पर दृष्टि डालना चाहिए। मैं कैसे रहता हूॅ बैठता हूॅ और सामान्यतः व्यवहार करता हूॅ। मुझमें इन बातोस का सम्पूर्ण योग ही धर्म है।''

गांधी ने सभी धर्मो मे जिन मूल्यों की एकता एंव उपस्थिति को देखा उनमें सत्य, ईश्वर की खोज, प्रेम एवं नैतिकता को अग्रण्य माना जा सकता है। इन्ही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मूल्यों से राजनीति भी संचालित होनी चाहिए ऐसी गांधी की मान्यता है। गांधी के लिए प्राथमिक राजनीति नही वरन् नैतिकता एवं नीति है, इसी कारण गांधी ने लोकनीति अर्थात नीति प्रदान राजनीति की बात की जिसे कालान्तर में राजनीति के आध्यात्मीकरण सिद्धान्त के रूप में उद्विकसित किया।

गांधी की दृष्टि में सदगुणी व्यक्ति की अनिवार्यता है– आत्मशुद्धि। ईश्वर से साक्षात्कृत व्यक्ति आत्मिक दृष्टि से शुद्व है, चूंकि गांधी के लिए सत्य ही ईश्वर है, अतः सत्य की अनवरत खोज ही व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में उचित चरण है। [18]

गांधी जी ने एक नया वाक्य– ''ईश्वर सत्य है'' की जगह ''सत्य ही ईश्वर'' दिया है गांधी जी का मत है [26] कि ईश्वर ही सत्य है, ऐसा कहने में एक दोष उत्पन्न हेाता है कि ईश्वर और कुछ भी है, किन्तु सत्य ही ईश्वर है, ऐसा कहने में दूसरे सब नाम छूट जाते है, केवल सत्य का ही व्यान रहता है, गांधी जी ने सत्य को ही ईश्वर माना है और साथ ही सत्य को अहिंसा से भी सम्बंधित बताया है। गांधी जी के अनुसार ईश्वर धार्मिक प्रत्यय हे, परन्तु सत्य मूलतः नैतिक प्रत्यय है।। इस तरह अनीश्वरवादियों को भी गांधी जी ने धार्मिक श्रेंणी में रखा है जो नैतिकता को मानते है।

धर्म की इस भारतीय परंपरा का अनुसरण करते हुए गांधी जी ने हिंदुस्तान में प्राचीन काल से चले आ रहे धर्म में सुधारक की हैसियत से काम किया था ओर बार बार घोषणा की थी उनकी प्रत्येक प्रवृति का स्त्रोत उन का धर्म ही थां इसी धर्म की उन्होने अपने समय के अनुरूप व्याख्या की थी और इस व्याख्या के अनुसार अपने तथा समाज के जीवन को संचालित करने की कोशिश की थी।

प्रो. राईट के अनुसार [28] धर्म– दर्शन धर्म की सत्यता तथा धर्म के व्यवहारो एंव विश्वासो की मूल विशेषताओं का सम्पूर्ण जगत की दृष्टि से विवेचन करता है। तथा धर्म का संबंध तत्व से निश्चित करता है। हिक धर्म–दर्शन के शाब्दिक अर्थ पर बल देता हुआ कहता है कि धर्म के विषय में दार्शनिक चिन्तन ही धर्म दर्शन है, धर्म दर्शन के यथार्थ स्वरूप को समझने के लिए इसका धर्म के इतिहास, विज्ञान अथवा हयूम की शब्दावली में ''धर्म का प्राकृतिक इतिहास''ईश्वर–विधा, धर्म मनोविज्ञान और आध्यात्मकशास्त्र से अन्तर करना आवश्यक है।

गांधी जी मानवतावादी धर्म में विश्वास करते है। उनके अनुसार सत्य,अहिंसा, प्रेम व न्याय मानवीय मूल्य है, जिनका पालन प्रत्येक परिस्थिति में आवश्यक है। गांधी जी के अनुसार सत्य ओर अहिंसा का पालन करने पर ही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मानवता को कायम रखा जा सकेगा। जिस व्यक्ति में ये दो मानवीय गुण है वही सच्चे अर्थो में धर्म निरपेक्ष है और मानवता का सेवक है। गांधी जी राज्य को धर्म निरपेक्ष मानते है, मानव को नही। उनकी धर्मनिरपेक्षता धर्माश्रित मानवतावादी है इसलिए तो उन्होने कहा [29] कि "मेरा नैतिक धर्म उन नियमों से बना है, जिनसे सारे संसार के मानव आबद्ध है। वे लिखते है कि " बेसक राज्य को धर्मनिरपेक्ष होना चाहिए, उसमें रहने वाले हर नागरिक को बिना किसी रूकावट के अपना धर्म मानने का हक होना चाहिए, जब तक वह देश के आम कानून को मानता है।"

गांधी जी का धर्म भौगोलिक सीमाओ से बंधा हुआ नही था। उन्होने कहा था, [30] " जिस दिन भारत तलवार के सिद्वान्त को ग्रहण करेगा, वही मेरी परीक्षा का दिन होगा और मुझे आशा है कि मै अपने कर्तव्य में हल्का न उतरूंगा..... अगर मुझे उसमें जीवित श्रद्वा होगी, तो वह मेरे भारत प्रेम को भी पार कर पाएगी।

गांधी जी गहन रूप में धार्मिक थे। पर उन्होने कहा था [20] कियदि भारत की पूरी आबादी एक ही धर्म को मानने वाली होती, तब भी राजकीय धर्म के किसी भी प्रस्ताव का वे विरोध करते। धर्म को वे एक व्यक्तिगत प्रकृति के रूप में देखते थे। जब एक मिशनरी ने उनसे पूछा कि क्या स्वतंत्र भारत में पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता होगी, तो उन्होने कहा था : " राज्य आपके धर्मनिरपेक्ष कल्याण, स्वास्थ्य, संचार, विदेशी संबंध, मुद्रा आदि की देखभाल करेगा, आपके और मेरे धर्म की नही। यह प्रत्येक व्यक्ति का निजी मसला है"। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन मे गांधी जी के हार्दिक अनुमोदन के साथ मूलभूत अधिकारी से संबंधित जिस प्रस्ताव को स्वीकार किया गया था, उसमें धार्मिक स्वतंत्रता के सिद्वानत ओर अल्पसंख्यको की समुचित सुरक्षा का आश्वासन था। इसमे धार्मिक स्वतंत्रता के सिद्वान्त और अल्पसंख्यको की समुचित सुरक्षा का आश्वासन था। इसमें घोषणा की गई थी कि " राज्य सभी धर्मो के मामले में निरपेक्षता बरतेगा।" इस सिद्वान्त को स्वतंत्र भारत के संविधान में शामिल किया गया। इसके बाद भी मुस्लिम लीग ने धर्म के आधार पर देश के विभाजनस के लिए लडाई की और लडाई जीती।

धर्म के प्रति निष्ठावान होने के कारण ही वे अछूतो के प्रति आकृष्ट हुए। " जो मनुष्य जितना ही अच्छा होगा, उसमें समवेदना और सहानुभूति उतनी ही अधिक मात्रा में मिलेगी। वे अस्पृश्यता तथा अस्पृश्यों के प्रति किये जाने वाले अन्यायो की देश के लिए कलंक मानते थे। अछूतों के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति थी। भारतीय समाज पर लगे इस कलंक को धोने के लिए उन्होने जो

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रयत्न किये, उन्ही के फलस्वरूप आज देश में उत्तरदायित्व की चेतना जागरित हुई है।

गांधी जी आत्मानुशासन में विश्वास करते थे। वे यह अनुभव करते थे कि उनकी अपनी निजी प्रगति और जीवन में जो कुछ प्राप्त करने में समर्थ हो सके है। वह इसलिए संभव हो सका है कि वे सदा से अनुशासित जीवन यापन करते रहे है। वे गीता के अनुसार यह मानते थे कि ''युक्ताहार विहार, युक्त चेष्टा और उपयुक्त निद्रा एवं जागर्तिका प्रयोग करने वाले व्यक्ति का योग दुखो का नाश करने वाला होता है।'' [21]

उन्होने कहा [35], '' मै एक राजकीय धर्म में विश्वास नही रखता, चाहे सारे राष्ट्र का एक ही धर्म क्यों न हो।'' राजकीय हस्तक्षेप शायद सभी दशाओं में अरूचिकर ही रहे। ''धर्म एकान्ततः वैयक्तिक विषय है। वह पूर्ण अथवा आंशिक रूपेण धार्मिक संस्थाओं को राजकीय सहायता दिए जाने के विरोधी थे। वह राजकीय संस्थाओं में किसी प्रकार की विशेष साम्प्रदायिक अथवा वर्गीयय शिक्षा दिए जाने के विरोधी थी। वह धार्मिक शिक्षा को धार्मिक संस्थाओं का ही मामला रखना चाहते थे। वह धर्म को वैयक्तिक निर्णय का विषय मानते थे। वह संगठित राज्य अभिकरणो द्वारा- लोगो की धार्मिक बातों में पडने को पसंद नही करते थें। उन्होने कहा था, '' यदि मैं तानाशाह हेाता तो धर्म तथा राज्य दोनो को पृथक रखता। अपने धर्म की शपथ लेकर मैं कहता हूॅ, मैं इसके लिए प्राण दे सकता हूॅ। किन्तु यह मेरा व्यक्तिगत मामला है। राज्य का इससे कुछ लेना देना नही है।

गांधी जी गहन रूप में धार्मिक थे। पर उनका मत था [36] कि यदि भारत की पूरी आबादी एक ही धर्म को मानने वाली होती, तब भी राजकीय धर्म के किसी भी प्रस्ताव का वे विरोध करते। धर्म को वे एक व्यक्तिगत प्रवृति के रूप में देखते थे। जब एक मिशनरी ने उनसे पूछा कि क्या स्वतंत्र भारत में पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता होगी, तो उन्होने कहा था : '' राज्य आपके धर्मनिरपेक्ष कल्याण, स्वास्थ्य, संचार, विदेशी संबंध, मुद्रा आदि की देखभाल करेगा, आपके और मेरे धर्म की नही। यह प्रत्येक व्यक्ति का निजी मामला है।

गांधी जी ने धर्म को सरल रूप में सर्वसाधारण के सामने रखने की चेष्टा की है। मनुष्य का स्वार्थ धर्म के साथ मिलकर धर्म को कलुषित बना देता हे। गांधी जी ने धर्म के बाहय आडम्बर को परित्याग कर उसके सार तत्व को समझने पर बल दिया है। गांधी जी धर्म के कलुषित रूप एवं उससे समाज को हानि के प्रति सजग हे। इस कारण गांधी जी ने धर्म का आधार नैतिकता को माना है। गांधी जी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

का ऐसा मत है कि जो धर्म व नैतिकता से विरवक्त और व्यावहारिकता से परे है, उसे धर्म की उपाधि नही दी जा सकती। धार्मिक मनुष्य के प्रत्येक कर्म का स्त्रोत उसका धर्म होता है। धर्म का अर्थ ईश्वर के साथ बंधन है। इस प्रकार गांधी दर्शन का केन्द्र बिन्दू धर्म विचार है। साधरणतया लोग धर्म का अर्थ ईसाई धर्म, हिन्दू धर्म, आदि धर्मो से मानते है, किन्तु गांधी ने धर्म का अर्थ हिन्दू धर्म, ईसाई धर्म, या इस्लाम से नही, वरन उसे एक वृहद अर्थ मे लिया हे। उनके अनुसार धर्म से परे प्रतीक एवं आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास है।

गांधी जी ने अपने समय के प्रमुख धर्मो और दर्शनों का गहराई से अध्ययन किया था। संपूर्ण गांधी वाड्मय में जब हम गांधी जी द्वारा पढी गई पुस्तकों की सूची देखते है तेा आश्चर्यचकित रह जाना पडता है। अपने समय के भारत वर्ष मे शायद गांधी जी ने सबसे ज्यादा और सबसे विविध तरह की पुस्तके पढी थी और फिर उसमें मुख्य विशेषता यह है कि पढाई उन्होने एक विशेष सांस्कृतिक राजनैतिक वीरता और पुरूषार्थ की साधना के भाव से की थी।

गांधी जी का जीवन धर्म का जीवन था। उन्होने जो कुछ कहा, जो कुछ किया, वह सब धर्म था। उनका मत था [22]–''धर्म चाहे जो हो पर उसकी मूल बात एक है। हिन्दू धर्म मानता है कि सब धर्मो से सत्य है। इसलिए सब धर्मो में श्रृद्वा और आदर का भाव रखना चाहिए। दूसरे धर्मो का आदर करने से अपने धर्म में आदर कम नही होता।''

दूसरे धर्मो के बारे में उन्होने लिखा है कि – ''मैं संसार के किसी भी धर्म को झूठा नही मानता। सभी धर्मो ने मनुष्य जाति को ऊपर उठाने का काम किया है और वे आज भी अपना काम कर रहे है। जब मैंनें बाइबिल में यह पढा कि– इस संसार को ईश्वर और उसकी नेकी का राज्य बना लो तो सब चीजे तुम्हे मिल जायेगील–तभी से यह वाक्य मेरे हदय पर अंकित हो गया। मैं चाहता हूॅ कि आप इस कथन को समझे और इसकी भावना के अनुसार आचरण करें।'' [23]

लेकिन महात्मा गांधी ऐसा मानते थे। उनका मत था [24] कि अगर यह जांचना है कि कौन आदमी धर्म का कितना पालन करता है तो देखना यह चाहिए कि वह अपने रोज के कामों को किस तरह करता है। किस प्रकार वह दूसरे लोगों से बातचीत करता है, किस प्रकार खाना खाता है, नहाता है, सोता और जागता है।

गांधी की विशेषता इस बात में निहित है कि उन्होने धार्मिक संघर्ष का मार्ग नहीं प्रशस्त किया है अपितु ऐसे आदर्श को सबके सामने प्रस्तुत किया है जिसे

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अपना कर लोग शाांतिपूर्वक रह सकते है उन्होने अपने विषय में स्पष्ट शब्दों में लिखा है, [42] ''मेरे जीवन में ऐसी घटनायें घटती जा रही है जिनके कारण मैं अनेक धर्मविलम्बियों और अनेक जातियो के गाड़ परिचय मे आ सका हूँ। इन सबके अनुभवो के आधार पर कहा जा सकता है कि मैने अपने और पराए, देशी और विदेशी, गौरे और काले, हिन्दू और मुसलमान अथवा ईसाई, पारसी या यहूदी के बीच कोई भेदभाव नही किया है। मैं कह सकता हूँ कि मेरा हदय ऐसे भेद को पहचान ही न सका। अपने संबंध में इस चीज को मैं गुण नही माना, क्योंकि जिस प्रकार अहिंसा, ब्रहमचर्य, अपरिग्रह, आदि नियमों की सिद्धि का प्रयत्न करने का ओर उस प्रयत्न के अब तक चलने का मुझे मान है, उसी प्रकार मुझे याद नही पडता कि ऐसे अभेद को सिद्ध करने का मैने प्रयत्न किया हो।'' अनायास सिद्ध होने वाला सर्वधर्म समभाव का यह आदर्श जीवन पर उनके गले का कण्ठहार बना रहा है और उसी के निष्पादन में उन्होने अपने अस्तित्व का बलिदान भी कर दिया।

संदर्भ

1. विजयपश्री चन्द्र, महात्मा गांधी का धर्म दर्शन, जानकी प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली, 1997 पृ. 167
2. विश्वनाथ सिंह, महात्मा गांधी और धर्म, साक्षरता निकेतन प्रकाशन, लखनऊ, 2000, पृ. 15
3. डा. तेजराम, डॉ. बलवीर शर्मा, गुरू जम्भोज एवं महात्मा गांधी के धर्म-दर्शन का समीक्षात्मक मूल्यांकन,निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1996, पृ. 187
4. के.एम. भनोट, राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी बुक डिपो, भिवानी, 2004, पृ. 501
5. डॉ. ए.के. रूस्तगी, डॉ. पी.सी. जैन, आधुनिक भारतीय राजनीतिक एवं सामाजिक चिन्तन, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2005 पृ. 340
6. मनोज कुमार, आशुतोष कुमार, महात्मा गांधी एक अवलोकन, के.के पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
7. डॉ. भगवानदास, सब धर्मो की बुनियादी एकता, चौखम्बा विधा भवन, वाराणसी 1961 पृ. 264
8. के.एम. भनोट, राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी बुक डिपो, भिवानी, 2004 पृ. 502

9. वही,
10. डॉ. रामरतन, डॉ. शारदा शोभिका, महात्मा गांधी की राजनीतिक अवधारणायें, कालिंग पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1992 पृ. 07
11. दैनिक जागरण, 2 अक्टूबर, 2008
12. महात्मा गांधी रामनाम, नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद, 1962 पृ. 33
13. डॉ. भगवानदास, सब धर्मो की बुनियादी एकता, चौखम्बा विधा भवन, वाराणसी, 1961 पृ. 286
14. विश्वनाथ सिंह, महात्मा गांधी और धर्म, साक्षरता निकेतन प्रकाशन, लखनऊ, 2000 पृ. 18
15. डॉ. शेफाली बाथौनिया, महात्मा गांधी एवं विश्व, ए.बी.डी. पब्लिशर्स, जयपुर, 2008 पृ. 160
16. इकबाल नारायण, आधुनिक राजनीतिक विचारधाराऍ विकास ग्रन्थ, जयपुर 2001, पृ. 63
17. डॉ. एस.ए.बारी. गांधी जी के धर्म का सार्वलौकिक आधार, विरोधी कमेटी, नई दिल्ली, 1969, पृ. 04
18. विजयपश्री चन्द्र " महात्मा गांधी का का धर्म दर्शन" जानकी प्रकाशन, नई दिल्ली, पटना, 1997 पृ. 169
19. ओमप्रकाश त्रिखा, सर्व धर्म एकता, ग्राम सेवा प्रकाशन करनाल, 1961, पृ. 56
20. मनोज कुमार, आशुतोष कुमार, महात्मा गांधी एक अवलोकन, के.के. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2007, पृ. 70
21. एस. राधाकृष्णन, महात्मा गांधी, सौ वर्ष, सर्वोदय, साहित्य प्रकाशन, वाराणसी, 1969, पृ. 219
22. रामेश्वर मिश्र पंकज, गांधी जी की विश्व दृष्टि, मानक पब्लिकेशन्स, प्रा.लि. , दिल्ली, 1992, पृ. 74
23. डॉ. एन. महालिंगम्, महात्मा गांधीः चिंतन का व्यवहारिक पक्ष, साहित्य शोध संस्थान, नई दिल्ली, 1997, पृ. 32
24. विश्वनाथ सिंह, महात्मा गांधी और धर्म, साक्षरता निकेतन प्रकाशन, लखनऊ, 2000, पृ. 16